मेरी स्वर्णेस्वरी साधना

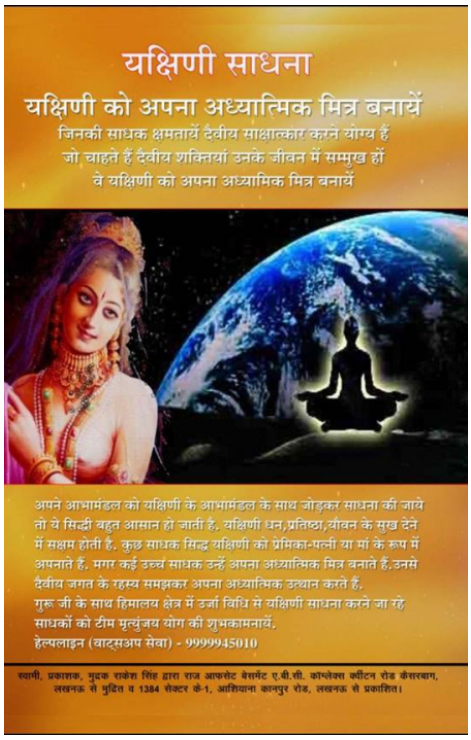

अपने आभामण्डल को यक्षिणी के आभामण्डल से कनेक्ट करके साधना करने वालों की यक्षिणी सिद्धि आसान हो जाती है. धन ,यौवन,प्रतिष्ठा देने में सक्षम यक्षिणी को वैसे तो साधक प्रेमिका,पत्नी, बहन या मां के रूप में अपनाते हैं. मगर **एनर्जी गुरुजी ने यक्षिणी को अध्यात्मिक मित्र के रूप में अपनाने को प्राथमिकता दी है.** इस रूप में सिद्ध यक्षिणी भौतिक सुखों के साथ ही दैवीय लोक की रहस्यमयी जानकारियां देकर उच्च सिद्धियों के सफर में सहयोग करती है। इस रूप में यक्षिणी को पुरुषों के अतिरिक्त उच्च महिला साधक भी सिद्ध कर सकती हैं। गुरू जी के निकट शिष्य शिवांशु जी ने यक्षिणी को अपनी अध्यात्मिक मित्र बनाने की सिद्धी साधना को *मेरी स्वर्णेस्वरी साधना* शीर्षक से प्रस्ताविक ई बुक में लिखा है. स्वर्णेस्वरी यक्षिणी वर्ग की देवी हैं. उन्हें प्रायः लोग धन सम्पत्ति के लिये सिद्ध करते हैं. मगर गुरूजी के निर्देश पर शिवांशु जी ने स्वर्णेस्वरी देवी को अपना अध्यात्मिक मित्र बना लिया. वे सिद्ध होने पर साधक के जीवन में चौतरफा सोना भर देती हैं. इसीलिये कुछ विद्वान इन्हें धनदा देवी भी कहते हैं. गुरुजी के निकट शिष्य शिवांशु जी ने जब पहली बार स्वर्णेश्वरी सिद्धी की. तो उन्हें किन अड़चनों का सामना करना पड़ा. देवी सिद्धी के अपने अनुभवों को उन्होंने प्रस्तावित ई बुक में लिखा है. ताकि साधक लाभ उठा सकें. धनदा सिद्धी कर सकें.

सिद्ध पुरुष ने मेरी जेब में पडे कार्ड नं. बता कर चौका दिया

प्रणाम मैं शिवांशु
बात 2009 की है. 5 साल के संयम के बाद गुरुदेव ने मुझे साधक माना. जबकि इससे पहले मै गंधर्व साधना सिद्ध कर चुका था. गुरुदेव ने ही वो सिद्धी कराई थी. अप्सरा मेरे सम्मुख शरीर आ चुकी थी. लेकिन इसके बावजूद गुरुदेव मुझे साधक नही मानते थे. जब भी मै किसी सक्षम साधना की बात करता तो टाल जाते. ज्यादा जिद करने पर कहते पहले साधक बनो. ये सुनकर मै हर्ट हो जाया करता था. मन में सोचता और कितना साधक बनूं. जिसके लिये कुछ लोग जीवन भर लगे रहते हैं. वैसी एक देवी को तो सामने बुला लिया. क्या वो साधना नही थी. गुरुदेव की आदत है, एक बार न कर दी, तो हां नही करते. शुरुआत में लगता है जैसे उनका फैसला तानाशाही वाला है. मगर बाद में पता चलता है कि वही फैसला सर्वश्रेष्ठ था. मै उनके पत्रकारिता के जीवन के समय से इस बात से परिचित था. सो चुप हो जाया करता था.
एक दिन उन्होंने खुद कहा. चलो तुम्हें कोई बड़ी साधना कराता हूं. मेरा रोम रोम झूम गया. मै समझ गया कि गुरुवर अब मुझे साधक मानने लगे हैं. मेरी आवाज, मेरी बाड़ी लैंग्वेज, मेरे शब्द सब मेरी खुशी की कहानी कह रहे थे. उन दिनो गुरुदेव दिल्ली में थे. मै विभागीय काम से उड़ीसा में था. पहली फ्लाइट से मै दिल्ली पहुंच गया.

अगले दिन हम हिमालय के लिये निकल पड़े. मेरी साधना वहीं होनी थी. हम सड़क मार्ग से जा रहे थे. गाड़ी में हम दो ही थे. रात 12 बजे के बाद दिल्ली से निकले. गुरुवर खुद ड्राइव कर रहे थे. उन्होंने हरिद्वार की तरफ से जाने की बजाय नैनीताल की तरफ का रास्ता लिया. बरेली में उनके एक अध्यात्मिक मित्र मिले. वे भी हमारे साथ हो लिये. वे मुस्लिम थे. वे सिद्ध पुरुष थे. बहुत साधारण वेषभूषा में भी वे बड़े तेजस्वी नजर आ रहे थे. उनका नाम सईद भाई था. वे पान की एक दुकान के पास खड़े मिले. बीड़ी पी रहे थे. गुरुदेव को देखते ही बीड़ी का लम्बा कस लिया और नीचे फेंक कर उसे पैर से मसल दिया. तब तक गुरुवर गाड़ी से नीचे उतर गये थे. दोनो मित्र गर्मजोशी से एक दूसरे के गले मिले. मै भी गाड़ी से नीचे आ गया था. गुरुवर के इशारे पर सईद भाई के पैर छुवे. तो उन्होंने मुझे गले लगा लिया. गेरुदेव के मित्र से गले मिलते वक्त मै झिझक सा गया. सईद भाई ने मेरा हौसला बढ़ाते हुए दोबारा गले लगा लिया. उनके व्यक्तित्व ने मुझे चौंका दिया. गाड़ी में घुसते ही उन्होंने मेरा नाम बता दिया. जब तक मै उनके बारे में कुछ सोचता, तब तक ये भी बता दिया कि मेरी जेब में 24637 रुपये हैं. मेरा मुंह आश्चर्य से खुला रह गया. तभी उन्होंने मेरी जेब में पड़े डेबिट कार्ड का नं. बताया. मुझे नं. याद था. सुनकर मै सन्न रह गया. मेरी हालत देखकर सईद भाई के साथ गुरुदेव भी ठहाका लगाकर हंस पड़े. गुरुवर को खुलकर ठहाका लगाते हुए मै काफी दिनों बाद देख रहा था. वे बोले क्या सोच रहे हो. सईद भाई ये भी बता सकते हैं कि पिछले ढाबे पर तुमने क्या था. और ढाबे वाले को कितने पैसे दिये थे. कैसे. मैने पूछा. मुझे अच्छी तरह याद है उस वक्त अचम्भें के कारण मेरे मुंह से शब्द निकलने मुश्किल हो रहे थे.

तुम्हारे बारे में इनके शागिर्द इन्हें सारी सूचना दे रहे हैं. गुरुदेव ने बताया. उर्दू में शागिर्द का मतलब चेले या नौकर होता है. मै अचम्भित हुआ कि सईद भाई ने किन लोगों से मेरी जासूसी कराई. वो भी इतनी सटीक जानकारी. अभी गिनने से पहले मुझे खुद नही पता था कि मेरी जेब में कितने पैसे हैं. मैने गुरुदेव से पूछा कैसे शागिर्द हैं, जो दिख तो रहे नहीं, मगर जेब के भीतर तक की खबर रखते हैं. मेरे सवाल पर सईद भाई ठहाका लगाकर हंस पड़े. गुरुवर ने गाड़ी के डेक प्लेयर पर पुराने गाने बजा दिये. इसका मतलब था अब वे मेरे किसी सवाल का जवाब नही देने वाले थे. मै समझ गया. चुप हो गया. मगर मेरे दिमाग में सवालों की लम्बी श्रंखला उमड़ रही थी. खुद ही जवाब तलाशने की कोशिश कर रहा था. जवाब तो नही मिले मगर दिमागी उलझाव बढ़ता गया. मन सईद भाई के बारे में सब कुछ जान लेने के लिये ब्याकुल हो रहा था. मगर उनके व्यक्तित्व का रहस्य बढ़ता जा रहा था. मुझे तब और अधिक आश्चर्य हुआ जब सईद भाई को गुरुवर के साथ हिंदू पद्धति की साधनाओं पर बातें करते सुना. वे हिंदु देवी देवताओं और साधनाओं के बारे में ऐसे बात कर रहे थे जैसे खुद हिंदु हों. उनकी बातों से लगा कि सनातन पद्धति से उन्होंने कुछ सिद्धियां भी अर्जित की हैं. बीच बीच में दोनो मित्र मुस्लिम पद्धति की कुछ साधना सिद्धियों पर भी चर्चा कर रहे थे. इससे पहले मुस्लिम साधना पद्धति पर गुरुवर को इतनी गहराई से बात करते नही देखा था. गुरुवर की मुस्लिम तंत्र पर इतनी गहरी जानकारी सुनकर भी मै अचम्भित था. कुछ देकर बाद गुरुदव ने गाड़ी एक ढाबे पर रोकी. वहां चाय पी गई. उसके आगे ड्राइविंग मेरे हाथ में थी. गुरुवर और सईद भाई पीछे की सीट पर बैठकर बातें करते थे. मै उनकी बातों में खोया था. अब तक की बातों से इतना जान गया था कि गुरुदेव मुझे जो साधना कराने हिमालय ले जा रहे थे. उसमें सईद भाई की भी अहम भूमिका है. इससे पहले गुरुवर ने मुझे सईद भाई के बारे में अधिक कुछ नही बताया था. बस इतनी जानकारी दे रखी थी कि बरेली में उनके एक अध्यात्मिक मित्र हैं. जो मुश्लिम हैं और सिद्ध हैं.

सुंदरी को व्यभिचार तंत्र से मुक्ति

सुबह हो गई. मुझे नींद के झोके आने लगे. दरअसल उड़ीसा से दिल्ली आने की ललक में मै दो दिन से सोया नही था. ऐसी स्थिति में आमतौर पर मै रात में तो जाग लेता हूं. मगर सुबह सूरज की किरणें चेहरे पर पड़ते ही नींद हावी होने लगती हैं.
गुरुवर समझ गये. उन्होंने एक जगह गाड़ी रोकने को कहा. मैने रोक दी. पीछे से उतरे और वे खुद ड्राइविंग सीट पर आ गये. मुझसे पीछे जाने का इशारा किया. गुरुदेव और सईद भाई पर नींद का प्रभाव बिल्कुल नही था. मै पीछे की सीट पर चला गया. मन में अफसोस हो रहा था कि मेरे रहते गाड़ी गुरुवर को ड्राइव करनी पड़ रही है. सईद भाई को पता चल गया कि मै नींद में हूं. उन्होंने मेरा सिर पकड़कर अपनी गोद में रख लिया. सहलाते हुए सिर पर हल्के हल्के थपकी देने लगे. मै कब सो गया पता ही नही चला.
जब उठा तब हम देहरादून में थे. देहरादून में सईद भाई के एक रिश्तेदार रहते हैं. हम वहीं गये. उनके रिश्तेदार अलीगढ़ के एक नवाबी खानदान से ताल्लुक रखते थे. उनका बेटा प्रशासनिक अधिकारी था. उस परिवार में 4 बेटे 2 बेटियां थीं. हम कुछ समय के लिये वहां रुके. उसी बीच देहरादून आने का कारण पता चला. दरअसल सईद भाई के रिश्तेदार की एक बेटी ऊपरी बाधा की शिकार थी. उसी के उपचार के लिये हम साधना की तरफ बढ़ते हुए देहरादून को मुड गये. गुरुवर की ये पुरानी आदत हैं. चाहे जितने जरूरी अध्यात्मिक काम से निकले हों. अगर बीच में उन्हें पता चले कि कोई समस्याग्रस्त है, और उनके पास उसकी समस्या का हल है. तो वे उस तरफ मुड़ जाते हैं. कहते हैं ***ये शिव काज है. इसे अधूरा नही छोड़ा जाना चाहिये*.** हलांकि सईद भाई के साथ यहां आना, उनकी यात्रा का एक हिस्सा था.
सईद भाई के रिश्तेदार प्रतिष्ठित होने के साथ ही बहुत भले लोग थे. वहां पता ही नही चल रहा था कि हम किसी दूसरे के घर में हैं. यहां मै उस लड़की का नाम नही लिखुंगा जो ऊपरी बाधा से ग्रसित थी. उस पर विचित्र बाधा थी. रात में उसका खुद पर नियंत्रण नही रहता था. अक्सर आधी रात के बाद वो घर से निकल जाती थी. और सुबह होते होते घर वापस आ जाती थी. कई बार वापस आने पर वो नशे में होती थी. पूछने पर कहती कि उसे जिन्न आकर ले गया था. उस जगह का नाम भी बताती थी. साथ ही कहती थी कि जिन्न ने वहां उसके साथ शारीरिक सम्बंध बनाये. अक्सर वह उस पर जगह पर अपना कोई अंडर गारमेंट छोड़कर आती थी. बाद में घर वालों को साथ ले जाकर वहां से अपने कपड़े बरामद कराती. घर के लोग डरे हुए थे. बदनामी के डर से बात को दबाये रहते थे. समस्या डेढ़ साल से थी. तमाम झाड़ फूंक का भी कोई फायदा नही हुआ था. जब लड़की सामने आयी तो मै दंग रह गया. दिखने में वह सीधी साधी और बड़े तहजीब वाली लड़की थी. उम्र 23 साल के भीतर रही होगी. उसके बारे में सईद भाई जो बता रहे थे. वे बातें देखकर उसकी पर्सनालिटी से मैच नही कर रही थीं. उसकी मुस्कान में भोलापन और जबरदस्त सम्मोहन था. उसका रंग दूध की तरह सफेद था. उसमें अप्सराओं सी खूबसूरती थी. मै उसे देखता ही रह गया. वो मुश्किल से 5 मिनट ही हमारे बीच बैठी. उसके बाद गुरुदेव ने उससे कहा बेटा आप जाओ. वह वहां से चली गई.

कमरे में मेरे अलावा गुरुवर, सईद भाई, लड़की के दो भाई और मां बचे. लड़की के पिता का दो साल पहले स्वर्गवास हो चुका था. लड़की के जाने के बाद सईद भाई और उनके रिश्तेदार उम्मीद भरी निगाहों से गुरुदेव की तरफ देखने लगे. मै भी.उत्सुकता हो रही थी कि ऐसी लड़की को बाधा मुक्त करने का क्या उपाय सामने आएगा. कुछ देर चुप रहने के बाद गुरुदेव ने सईद भाई से पूछा आपके शागिर्द तो बहुत सक्षम हैं. उन्होंने इसे क्यों नही ठीक किया. पता नही क्या बात है. सईद भाई के शब्दों में बेबसी दिखी. वे कह रहे थे मेरे शागिर्दों के सामने जिन्नातों की बिल्कुल नही चलने वाली. मगर मै इसे नही ठीक कर पाया. तो क्या आपके शागिर्दों ने बताया नही कि इस पर जिन्नात नही हैं. गुरुदेव ने पूछा तो सईद भाई ने हां में सिर हिलाया. मगर असमंजस में बोले तो बला क्या है.

गुरुदेव ने कहा कि कुछ बातें ऐसी हैं जो घर के लोगों के सामने नही कही जा सकतीं. सईद भाई गुरुदेव का मतलब समझ गये. उन्होंने घर के लोगों को वहां से जाने को कहा. लड़की के भाई तो चले गये. मगर उसकी मां वहीं बैठी रही. उसने कहा सईद भाई मेंरे भाई जैसे हैं. घर की हर बात मैं इनके सामने कह सकती हूं. और सुन भी सकती हूं. आप बेझिझक मुझे भी सब कुछ बताइये. इतनी तकलीफें झेल रही हूं कि अब किसी परदादारी की जरूरत नहीं. गुरुवर ने सईद भाई की तरफ देखा. उन्होंने हां में सिर हिला दिया.

गुरुदेव ने बताया लड़की पर जिन्नातों का साया नही है. वह अपनी मर्जी से जाती है. जिन्नातों की बात घर के लोगों को डराने के लिये करती है. वह व्यभिचार तंत्र की शिकार है. जिसके प्रभाव से खुद पर कंट्रोल नही कर पाती. और बुरी संगत के दोस्तों से मिलने घर से निकल जाती है. उस समय अगर घर के लोग उसे बल पूर्वक रोकना चाहें तो भारी उत्पात करना चाहेगी. हां ऐसा ही करती है. उसकी मां ने पुष्टि की. तभी मेरे शागिर्द जानकारी देते थे कि वो किसी लड़के से मिलने गई है. सईद भाई ने कहा. मगर मै सोचता था कि जिन्नात उन लड़कों का रूप लेकर उसे ले जाते होंगे. हाय अल्ला, किसने मेरी लड़की को तंत्र में डाल दिया. उसकी मां रो पड़ी. ऊपर वाला उसे बख्सेगा नहीं.

व्यभिचार तंत्र क्या होता है और इससे कैसे निजात मिले. सईद भाई ने गुरुदेव से पूछा. पहली बात तो लड़की पर किसी ने तंत्र नही किया है. गुरुदेव ने बताया. वो खुद ही तंत्र की शिकार हो गई है. वो कैसे सईद भाई के साथ लड़की की मां ने भी पूछा. गुरुदेव ने **व्यभिचार तंत्र** की जो जानकारी दी वो बहुत चौंकाने वाली थी. उन्होंने बताया कि जब कोई व्यक्ति किसी के साथ नाजायज सम्बंध बनाता है, तब इसका खतरा रहता है. उदाहरण के लिये यदि कोई पुरुष शमशानी तंत्र से ग्रसित है. उन्हीं दिनों उसके किसी महिला से ताल्लुकात स्थापित होते हैं. तो व्यभिचार तंत्र का खतरा रहता है. क्योंकि शमशानी तंत्र की उर्जायें बहुत तीक्ष्ण होती हैं. वे डी.एन.ए. तक घुसपैठ करती हैं. वीर्य में डी.एन.ए. होता है. जो उन घुसपैठी उर्जाओं को लेकर महिला तक पहुंचता है. जिसके दुष्प्रभाव से महिला व्यभिचार की तरफ अग्रसर होती है. इसके लिये वो किसी भी स्तर तक जाने का दुस्साहस करती है. कई बार ऐसी महिलायें जीवन भर भटकाव की शिकार रहती हैं. इनका उपचार अत्यधिक सावधानी का विषय होता है. क्योंकि झाड़ फूंक से ये प्राब्लम और बढ़ जाती है. मगर ऐसे मामले लाखों में एक आध ही होते हैं. दुर्भाग्य की बात है कि आपकी बेटी उन लाखों में से एक निकली.

लड़की की मां बहुत डरी हुई थी. उसने याचना भाव से गुरुवर की तरफ देखा. फिर सईद भाई से बोली भाई जान चाहे लाखों खर्च हो जायें. मेरी बेटी को बचा लो. फिर उसने कहा कई बार मुझे ऐसा लगता था. मगर किसी से कह न पाई. वर्ना इसके भाई इसका कत्ल कर देते. गुरुवर ने कहा आप परेशान न हों. कोई खर्च नही होगा. बेटी ठीक हो जाएगी, ये मेरा वादा है. फिर गुरुदेव ने लड़की को बुलवाया. उससे 5 मिनट अलग बात की. लड़की ने स्वीकारा कि वो जिन्नातों वाली बात घर के लोगों को डराने के लिये कहती है. उसे अपने दोस्तों से मिलने जाना होता है. गुरुदेव ने उससे पूछा कि डेढ़ साल पहले उसका कौन दोस्त था. जिससे

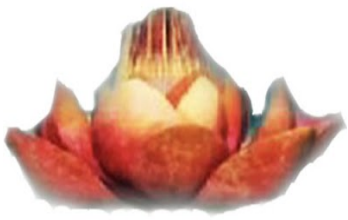

MRITYUNJAY YOG

उसके करीबी रिश्ते थे. लड़की ने बताया कि उन दिनों वह इंजीनियरिंग कालेज में थी. वहां दोस्तों के साथ नशा करने लगी. वे लोग अक्सर शराब और कभी कभी सिगरेट में नशा लेते थे. उसे इसकी आदत पड़ गई. उन्हीं दिनों लड़कों के सम्पर्क में आई. तभी से रात होते ही मन के भीतर इस सबके लिये छटपटाहत पैदा होने लगती है. और खुद को रोक नही पाती.

गुरुदेव ने सईद भाई को व्यभिचार तंत्र खत्म करने का उपाय बताया. हम तो अब तक लाखों रुपये खर्च चुके हैं. मगर कोई फायदा नही हुआ. लड़की की मां ने उपाय सुनकर कहा. क्या इससे सब ठीक हो जाएगा. दरअसल गुरुदेव ने जो उपाय बताया था उसमें 10-20 रुपये का ही खर्च था. इसलिये उन्हें यकीन नही हो रहा था. बुखार के मरीज को कैंसर की दवा देने से क्या फायदा. गुरुवर ने कहा जो समस्या है उसका ही समाधान हो तो बात बन जाती है. आप निश्चिंत रहें. आपकी बेटी ठीक होगी. इसके साथ ही गुरुवर ने लड़की की बुरी संगत छुड़ाने के लिये मुझे उसकी संजीवनी हीलिंग करने की जिम्मेदारी सौंपी. जिसे मुझे 6 माह तक करना था.

फिर हम सईद भाई को वहीं छोड़कर हिमालय की तरफ चल दिये. तय ये हुआ कि सईद भाई लड़की को व्यभिचार तंत्र से मुक्त कराने का उपाय 4 दिन कराएंगे. उसके बाद टैक्सी से देव प्रयाग पहुंचेंगे. हमारी उनसे अगली मुलाकात वहीं होने वाली थी. गाड़ी ड्राइव करते हुए मैने रिलैक्स मूड में देखकर गुरुवर से सईद भाई के शागिर्दों के बारे में पूछा. जिनकी मदद से वे जिन्नात हटाते हैं. लोगों के बारे में सब कुछ जान लेते हैं. यहां तक कि मेरी जेब में कितने रुपये हैं, ये भी जान लिया. जेब में पड़े डेविट कार्ड का नं. भी जान लिया. एक सवाल और था जब उनके अदृश्य शागिर्द सब कुछ जान लेते हैं तो उनके रिश्तेदार की लड़की के बारे में व्यभिचार तंत्र की बात क्यों नही जान पाये.

अदृश्य सहयोगी खोल देते है लोगो के छिपे रहस्य

हम हिमालय साधना के लिये जा रहे थे. रास्ते में गुरुदेव के अध्यात्मिक मित्र सईद भाई मिले. मेरी उनसे पहली मुलाकात थी. देखते ही उन्होंने मेरा नाम लिया. मेरी जेब में कितने रुपये हैं. ये बता दिया. जेब में रखे डेबिट कार्ड का नं. बता दिया. ये देखकर मै हैरान था. बिना बताये उन्हें मेरी जेब के भीतर तक की जानकारी कैसे हुई. जब मैने गुरुवर से इस बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि सईद भाई के शागिर्द उन्हें छिपी जानकारियां देते हैं. शागिर्द उर्दू शब्द है. इसका मतलब होता है चेला, शिष्य या करीबी सहयोगी.जब हम देहरादून में सईद भाई के रिश्तेदार के घर से निकलकर आगे बढ़े तो गुरुदेव से शागिर्दों के बारे में बताने का दोबारा आग्रह किया. इस बार वे मान गये और इस बारे में मेरे सभी सवालों के जवाब दिये.

गुरुदेव ने बताया कि मुस्लिम तंत्र में अदृश्य सहयोगियों को शागिर्द कहते हैं. साधक उन्हें अपने लिये सिद्ध करते हैं. उनसे काम लेते हैं. हिंदु पद्धति के तंत्र में इसे प्रेत सिद्धी कहा जाता है. सईद भाई ने भी ये सिद्धी की थी. उनके शागिर्द उन्हें लोगों के बारे में मनचाही सूचनायें देते थे. जैसे जो व्यक्ति सामने है उसका नाम क्या है. वो क्या सोच रहा है. उसकी जेब में क्या है. उसने अंदर क्या और किस रंग के कपड़े पहन रखे हैं. दो घंटे पहले तक उसने जो कुछ भी किया. शागिर्द वो सारी जानकारियां देने में सक्षम थे. जैसे कि वह व्यक्ति किससे मिला. क्या क्या किया. क्या खाया, क्या पिया. सब कुछ.

MRITYUNJAY YOG

ये सुनकर मै हैरान था. अगर सईद भाई ने मेरी जेब के भीतर क्या है ये न बता दिया होता. तो यकीन करने से पहले गुरुवर से ढेरों सवाल पूछता. वैसे सवाल तो अभी भी थे मेरे पास. गुरुवर उनके जवाब दे रहे थे. बताया सईद भाई अपने शागिर्दों का उपयोग लोगों की खोयी हुई चीजों को ढूंढने में करते हैं. लापता लोगों का पता लगाने में करते हैं. कई बार वे उनसे लोगों की परेशानी का कारण पता करते हैं. आपसी झगड़ों का कारण पता करते हैं. ऊपरी बाधा से ग्रस्त लोगों के झाड़ फूंक और उपचार में भी शागिर्दों का उपयोग करते हैं. सईद भाई के शागिर्द लोगों को प्रेत बाधा से मुक्ति दिलाने में भी उनका सहयोग करते हैं.

तो सईद भाई के शागिर्द उनके रिश्तेदार लड़की को बाधा मुक्त करने में मदद क्यों नही कर पाये. मैने गुरुवर से पूछा उसके बारे में जानकारी क्यों नही दे पाये. शागिर्दों ने जानकारी दी. मगर सईद भाई ने उनकी अनदेखी कर दी. गुरुदेव ने बताया. तुमने उस लड़की को देखा. उसकी मासूमियत देखकर कोई भी धोखा खा सकता है. सईद भाई भी उसकी मासूमियत से प्रभावित हो गये. इस कारण जब उनके शागिर्दों ने उन्हें बताया कि लड़की को जिन्न घर से नही ले जाते, बल्कि वो रात में लड़कों से मिलने घर से जाती है. तो सईद भाई ने मान लिया कि जिन्न लड़कों का भेष बनाकर लड़की को ले जाते हैं. वे लड़की को जिन्नों द्वारा प्रताड़ित मानते रहे. जबकि उनके शागिर्द इससे अलग जानकारी देने की कोशिश करते रहे. इसी कारण सईद भाई को लड़की को ठीक करने में सफलता नही मिली.

शागिर्द तो अदृश्य होने के कारण सब पता कर लेते हैं. लोगों को, चीजों को ढूंढ भी लाते हैं. लोगों के मन भी बदल देते हैं. फिर सईद भाई के शागिर्दों ने अपनी बात मनवाने की कोशिश नही की क्या. मैने पूछा.

हां अदृश्य सहयोगी ऐसा करने में सक्षम होते हैं. गुरुदेव ने बताया. मगर सारे नही होते. सबकी अलग अलग क्षमतायें होती हैं. कुछ सिर्फ सूचनायें भर देते हैं. वे समस्या बता सकते हैं. मगर उनके हल नही दे सकते. कुछ अधिक पावरफुल होते हैं. वे समाधान भी बता देते हैं. मगर वे समाधान करा नही सकते. कुछ बहुत अधिक क्षमतावान होते हैं. वे समस्या के साथ समाधान भी बता सकते हैं. समाधान को करा भी सकते हैं. मगर सभी अदृष्य सहयोगियों में एक बात कामन होती है. गुरुदेव ने विस्तार से जानकारी देते हुए बताया. वो ये कि अगर उनके द्वारा दी जाने वाली जानकारी को मानने से इंकार कर दिया जाये. तो वे निष्क्रयता ग्रहण कर लेते हैं. और जानकारियां देनी बंद कर देते हैं.

इस बात को मै ठीक से नही समझ पाया गुरुदेव. मैने कहा.

मान लो सईद भाई अपने शागिर्दों से पूछ कर तुम्हारे बारे में कोई जानकारी दें. वो बिल्कुल सही भी हो. मगर तुम उसे मानने से इंकार कर दो. तो वे आगे कि जानकारी देनी बंद कर देंगे. फिर सईद भाई तुम्हारे बारे में आगे का कोई राज नही खोल पाएंगे. ऐसा क्यों. मै थोड़ा अचम्भित सा हो गया.

बस यही नियम है अदृश्य सहयोगियों के काम करने का. गुरुदेव ने बताया.

ऐसे में जो साधक होते हैं वे क्या करते हैं. मेरी उत्सुकता अधिक रहस्य तक पहुंचने की हो चली. पहली बात जिनके बारे में एक दो छिपे रहस्य खोल दिये जायें. वे सामने वाले को अंतर्यामी मानकर उसके समक्ष नतमस्तक हो जाते हैं. उसकी बात को इंकार करना तो दूर काटने की भी हिम्मत नही कर पाते. गुरुदेव ने बताया. दूसरी बात जब कोई विरोध करता भी है, तो ऐसे सिद्ध साधक अपनी बात मनवाने के लिये आत्मबल का उपयोग करके अपनी बात मनवा ही लेते हैं. लोग उनके तौर तरीकों और श्राप आदि के डर से उनकी बातें स्वीकार कर लेते हैं.

इस तरह तो शागिर्द रखने वाले लोग किसी को ब्लैकमेल भी कर सकते हैं. मैने आशंका जताई.

नही गुरुदेव ने कहा. ऐसा नही होता. शागिर्द या इस तरह की अन्य सिद्धियां करने वाले प्रायः सक्षम साधक होते हैं. वे अपनी सिद्दी से ही अपनी जरूरतें पूरी करा लेते हैं. साथ ही वे खुद पर संयम बनाये रखने में भी सक्षम होते हैं. जो लोग सिद्ध नही होते मगर ऐसी सिद्धियों का पाखंड करते हैं. उनकी नियत खोटी होती है. वे हाथ की सफाई या बाजीगरी करके लोगों को ठगते हैं. वही आस्थावान लोगों के साथ अनुचित करते हैं. इसका मतलब सईद भाई के शागिर्दों ने उनकी रिश्तेदार लड़की के इलाज में खामोशी अपनाई. मैने पूछा.हां ऐसा ही समझो. गुरुदेव ने कहा. शागिर्द अपने नियमों का पालन कर रहे थे. जबकि सईद भाई लड़की की मासूमियत के कारण भावुकता के शिकार हुए.

MRITYUNJAY YOG

अब मेरी समझ में आया गुरुदेव बार बार क्यों कहते हैं कि **जिसका संजीवनी उपचार करो, उसे दिमाग से निकाल दो. उसके प्रति भावनायें शून्य करके रखो.** मेरे पास सवाल अभी भी शेष थे. मैने गुरुवर से पूछा जैसे शागिर्द होते हैं, क्या ऐसी कुछ और भी साधनायें होती हैं.

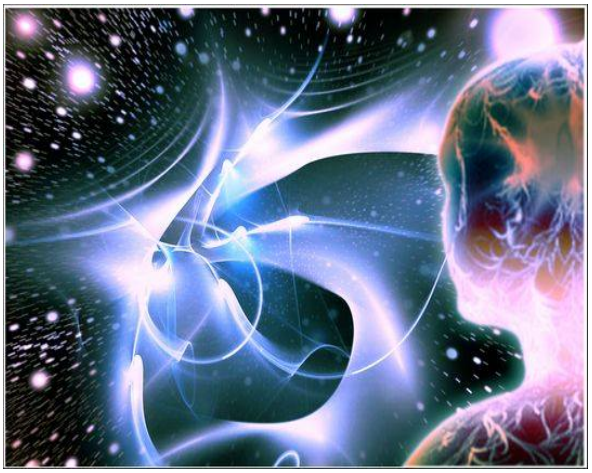

हां गुरुवर ने बताया. लगभग हर तंत्र में ऐसी साधनायें होती हैं. हिंदु पद्धति के तंत्र में इन्हें **कर्ण पिशाचिनी, कर्ण पिशाच, कर्ण घंटा, प्रेत सिद्धी, वीर सिद्धी, यक्षिणी सिद्धी** आदि के नाम से जाना जाता है. कुछ और साधनायें भी हैं इस तरह की.

क्या इनमें से मै भी कोई सिद्धी कर सकता हूं. मैने पूछा.

हां कर सकते हो, अगर **सार्थक उद्देश्य हो तो.** गुरुवर ने कहा अन्यथा इनमें से अधिकांश साधनायें साधक के समान्य जीवन को बिगाड़ देती हैं. बोलचाल की भाषा में बात करें तो इनका साधक सामाजिक प्राणी नही बचता.

क्या इस तरह की सिद्धियां में उर्जा विज्ञान की भी कोई भूमिका होती है. मैने पूछा

हां, गुरुदेव ने बताया. सारा मामला तो उर्जाओं का ही है. मैने इन साधनाओं के तमाम मंत्रों और पद्दतियों पर रिसर्च की है. सभी में एक समानता मिली. वो ये कि सिद्ध होने पर **कुछ खास ब्रह्मांडीय उर्जायें साधक के आभामंडल में आकर स्थाई रूप से वस जाती हैं.** वे धरती की उर्जायें नही लगतीं. शायद वे किसी और लोक या दूसरे डाइमेंशन के प्राणियों की उर्जायें हों. जिन्हें सिद्ध करके अपने आभामंडल में बुला लिया गया. इस तरह की सभी उर्जाएं इंशानों की उर्जा को रीड करने में दक्ष होती हैं. वे किसी भी व्यक्ति की उर्जा रीड करके उसकी दिनचर्या का पता लगा लेती हैं. ज्यादातर मामलों में सिद्ध की गई उर्जायें सामने आने वाले लोगों के आज्ञा चक्र में प्रवेश कर जाती हैं. वहीं से गुजरे हुए समय की जानकारी लेकर साधक के आज्ञा चक्र को देती हैं. साधक उन्हें बताता है तो उसे अंतर्यामी समझा जाता है. इसी कारण जब भी कोई व्यक्ति ऐसे सिद्ध साधक के सामने जाता है तो उसके माथे से लेकर भौंहों के बीच में दबाव या खिंचाव महसूस होता है. आज्ञा चक्र का यही क्षेत्र है. मगर अधिकांश मामलों में सिद्धि करके प्राप्त की गई ये उर्जायें लोगों के भविष्य की घटनायें नही बता पातीं. ऐसे में साधक गुजरी घटनाओं के तार जोड़कर अपने अनुमान से लोगों के भविष्य की घोषणा करते हैं. गुरुदेव ने बड़ा रहस्य खोला.

जब कोई व्यक्ति अपने बारे में दी गई जानकारी को मानने से इंकार कर देता है. तो उसका आज्ञा चक्र स्वालम्बी होकर पराधीनता को नकार देता है, गुरुदेव ने गूढ जानकारी देते हुए बताया. इसके कारण साधक द्वारा सिद्ध उर्जाओं को उसके आज्ञा चक्र से बाहर निकलना पड़ता है. ऐसे में वे उसके आज्ञा चक्र को नही पढ़ सकते. इसी कारण इंकार होने पर उस व्यक्ति के बारे में शागिर्द, कर्ण पिशाचिनी, यक्षिणी आदि निष्क्रिय होकर खामोश हो जाती हैं. उसके भीतर से कोई रहस्य नही निकाल पाते. मगर इंकार से पहले उनके द्वारा दी गई जानकारी अक्षरशः सत्य होती है.

गुरुदेव ने बताया साधक के आभामंडल में सिद्धी से आई बाहरी उर्जाओं का प्रभाव बहुत परिवर्तनकारी होता है. एक तरह से वे दोहरे आभामंडल के साथ जीते हैं. उनकी उर्जा दूसरों से बिल्कुल अलग हो जाती हैं. जिस तरह किसी के आभामंडल में भूत प्रेत के प्रभाव का पता लगाया जाता है. उसी तरह ऐसे सिद्ध साधक के आभामंडल को छूते ही पता चला जाता है कि उनके साथ कोई और भी है. मैने मन ही मन तय किया कि सईद भाई के देव प्रयाग आने पर उनके आभामंडल को छूकर देखुंगा कि सिद्ध उर्जाओं की छुअन कैसी होती है. हम हिमालय की घाटियों में प्रवेश कर चुके थे.

संत जो आशीर्वाद में सोने की चेन बाट रहे थे

मै गुरुवर के साथ साधना के लिये हिमालय की घाटियों में जा रहा था. मुझे नही पता था कि साधना के लिये कौन सी जगह चुनी गई है. इतना जरूर मालुम था कि वो जगह देव प्रयाग के आस पास होगी. क्योंकि गुरुदेव ने अपने अध्यात्मिक मित्र सईद भाई को वहीं मिलने के लिये कहा था. सईद भाई को बरेली से लेकर हम देहरादून छोड़ आये थे. देहरादून से हम ऋषिकेश की तरफ बढ़े.

ऋषिकेश पहुंचकर गुरुवर ने वहां रहने वाले अपने कुछ अध्यात्मिक मित्रों से मिलवाया. उनमें से एक का नाम जोगी महराज था. वे जोगी ही थे. यानी सन्यासी. बढ़ी दाढ़ी, लम्बे बाल, गुलाबी वस्त्र, सम्मोहक मुस्कान. अपने आप में उनके व्यक्तित्व में एक जोगी को रच रहे थे. लेकिन एक बात सन्यासियों के भेष से बिल्कुल अलग थी. उन्होंने सोने के ढ़ेर सारे आभूषण पहन रखे थे. कई उंगलियों में सोने की अंगूठियां, दोनो कलाईयों पर सोने के मोटे मोटे ब्रेसलेट, गले में अंडरवर्ड के भाईयों की तरह सोने की कई मोटी चेन, सोने के डायल वाली घड़ी उनकी कमर में लटकी थी.

अगर वे गुरुवर के मित्र न होते तो मेरे मन में उनकी छवि स्वर्ण लोभी सन्यासी की बनती. या मै उन्हें सीधे पाखंडी ही मानता. उनका गोल्ड प्रेम देखकर मै दंग था. तब मै और अधिक दंग रह गया जब पहली मुलाकात में ही उन्होंने अपने गले से एक मोटी चेन निकालकर मेरे गले में डाल थी. थोड़ी देर के लिये मुझे भ्रम हुआ कि वे नकली सोना पहने हैं. या कुछ समय बाद मुझसे चेन वापस ले ली जाएगी. वर्ना कोई प्रसाद की तरह किसी को सोना नही बांटता. मेरे गले में पड़ी चेन का वजन कम से कम 100 ग्राम महसूस हो रहा था. गुरुवर से परिचय जानकर मैने उनके पैर छुवे. उन्होंने आशीर्वाद में मेरी पीठ पर जोर की थपकी मारी और गले से निकालकर एक चेन मेरे गले में डाल दी.

वे हमें जाली एयरपोर्ट के पास मिल गये थे. ये इत्तिफाक था या पूर्व योजना. मुझे नही बताया गया. देहरादून से निकलकर जब हम ऋषिकेश की तरफ आगे बढ़े तो गुरुदेव ने मुझे एक नम्बर डायल करने को कहा. दूसरी तरफ से जो आवाज आई वो जोगी महाराज की थी. उन्होंने बताया कि वे जाली एयरपोर्ट से बाहर निकल रहे हैं. लंदन से लौटकर आये थे. गुरुदेव के कहने पर एयरपोर्ट पर ही रुक गये. जाली एयरपोर्ट देहरादून और ऋषिकेश के बीच में है. जब हम वहां पहुंचे तो वे इंतजार करते मिले. उन्हें एयरपोर्ट पर रिसीव करने उनके शिष्यों का लम्बा काफिला आया था. मगर जोगी महाराज हमारी गाड़ी में बैठे. मै उनसे पहली बार मिला था. लेकिन ऐसा लग रहा था हम जन्मों से एक दूसरे को जानते हैं. एक अनजाना अहसास. एक अजनवी सी पहचान. एक अनकहा अपनापन. मुझसे रहा न गया. मैने गुरुदेव से कह ही दिया कि ऐसा फील हो रहा है कि महाराज जी से मै बहुत बार मिल चुका हूं. ऐसा क्यों.

फील तुम्हें हो रहा है, सवाल मुझसे पूछ रहे हो. गुरुवर ने चुटकी ली. फिर जोगी महराज की तरफ देखकर मुस्कराने लगे. जोगी महराज उनकी तरफ देखकर मुस्करा रहे थे. दोनो जनों की मुस्कान में रहस्य सा छिपा था. मगर मुझे जवाब नही दिया गया. मै चुपचाप गाड़ी चलाता रहा.

ऋषिकेश पहुंचने पर पता चला कि जोगी महराज देवप्रयाग और रुद्रप्रयाग के बीच कई आश्रम बनवा रहे हैं. जो मुख्य सड़क मार्ग से हटकर पहाड़ी चोटियों पर हैं. दरअसल वे ऋषिकेश के एक होटल में जाकर रुके. हम भी उनके साथ थे. वहां उनसे मिलने आये लोगों में से कुछ की बातों से उनके आश्रमों के निर्माण की बात पता चली.शाम को हम लोग पहाड़ों की तरफ घूमने निकल गये. उसी बीच गुरुदेव के कुछ और अध्यात्मिक मित्रों से भेट हुई. उस दिन पहली बार मुझे मालुम हुआ कि हिमालय क्षेत्र में गुरुवर के कई सिद्ध अध्यात्मिक

मित्र रहते हैं. उनमें से एक बहुत गरीब से थे. वे पहाड़ों में रहकर साधनायें करते थे. मगर धन उनसे रूठा सा था. इस बारे में अवसर मिलते ही मैने गुरुवर उनकी इस दशा का कारण पूछा.

गुरुदेव ने बताया कि प्रारब्ध के कारण उनकी ऐसी हालत है. उनका नाम गिरधर था. मैने उनकी उर्जायें कई बार रीड कीं. वे सच्चे संत थे. उनमें साधनाओं की बड़ी क्षमता थी. वे इस हाल में जी रहे थे. बातों बातों में पता चला कि वे जहां रहते हैं. उस जगह पर कोई विवाद चल रहा है. उस पहाड़ का मालिक कोई स्थानीय व्यक्ति है. उसने गिरधर जी को उस जगह की कीमत न देने पर उनकी कुटिया तोड़ देने की वार्निंग दे रखी थी. ये बात गिरधर जी ने नही बताई. बल्कि उनके साथ रहने वाले दो अन्य सन्यासियों में से एक ने अलग से मुझए बता दी. जिसे सुनकर मेरा मन बड़ा बेचैन हो गया. जिसके दो कारण थे. एक तो ये कि इतने सच्चे साधक होकर उन्हें साधनाओं का फल क्यों नही मिल रहा. दूसरा ये कि गुरुदेव या जोगी महराज ने उनकी कुछ मदद क्यों नही की. वे तो उनके सच्चे मित्रों में से थे. इस बात ने मुझे उदास कर दिया. मन में छटपटाहट सी थी.

शाम को जब हम होटल लौटे तो एक समय ऐसा अकेलापन मिला, जब कमरे में मै, गुरुदेव, जोगी महराज और गिरधर महराज ही थे. उसी समय गिरधर महराज ने एक हाथ की बंद मुट्ठी गुरुवर की तरफ बढ़ाई. गुरुदेव समझ गये वे कुछ देना चाहते हैं. गिरधर महराज ने मुट्ठी खोली तो उसमें से सोने की चेन गुरुदेव की हथेली में आ गिरी. गिरधर महराज मुस्कराते हुए गुरुदेव से बोले उर्जा नायक आपका शिष्य बड़ा दयालू है. गुरुदेव ने मेरी तरफ देखा. उनके हाथ में वही चेन थी, जो मैने थोड़ी देर पहले गिरधर महराज के साथी सन्यासी बुलेडराम को दी थी. जब बुलेड़राम जी ने मुझे धनाभाव के कारण गिरधर महाराज के आश्रम के टूटने की आशंका जताई. तो मैने उन्हें गले में पड़ी चेन उतारकर दे दी थी. ये वही चेन थी जो जोगी महराज ने मुझे पहनाया था. मैने उनसे कहा था कि चेन को बेचकर आश्रम का कर्ज चुका लें. साथ ही झोपड़ियों की जगह पक्का आश्रम बनावा लें. बुलेड़राम ने मुझे बताया था कि बरसात होने पर पानी झोपड़ियों में भर जाता है. जिससे साधनायें तो दूर रहने तक की जगह नही बचती. मैने बुलेड़राम जी से आग्रह किया था कि चेन वाली बात वे किसी को न बतायें. चुपचाप आश्रम के लिये उपयोग कर लें. लेकिन वे ठहरे संत. धन की बातें कैसे छिपा लेते. वह भी अपने मित्र सन्यासी से. उन्होंने गिरधर महराज को सब बता दिया. मेरी पोल खुल गयी.झिझक के मारे मैने गर्दन झुका ली.

मेरी दशा देखकर जोगी महराज ने कहा तुमने शर्मिंदगी वाला कोई काम नही किया है बच्चे. फिर वे गुरुदेव से बोले उर्जा नायक आपका ये बच्चा मुझे पसंद आ गया. अगर आप इजाजत दें तो मै इसे स्वर्णेस्वरी साधना कराना चाहुंगा. **स्वर्ण सिद्धी के बाद से मुझे पहला पात्र मिला है. जिसकी दिलचस्पी सोने से ज्यादा दूसरों के दुखों से है.** गुरुदेव सिर्फ मुस्कराकर रह गये. कुछ देर चुप रहने के बाद उन्होंने मुझसे कहा तुम्हें क्या लगता है. हम गिरधर जी का सहयोग नही करना चाहते. हम तो खुद ही उनकी दशा से दुखी हैं. मगर ये किसी का सहयोग नही लेना चाहते. कहते हैं अपने प्रारब्ध खुद ही काटेंगे.

ऐसे क्या प्रारब्ध हैं. जिनके कारण महराज जी को ऐसी स्थिति से गुजरना पड़ रहा है. मैने पूछा.

जवाब गुरुदेव की बजाय जोगी महराज ने दिया. वे बोले मै बताता हूं. मेरे पास आओ. मै उनके पास जाकर बैठ गया. खुद ध्यान में बैठते हुए उन्होंने मुझसे कहा ध्यान लगाकर बैठ जाओ.उसी बीच गुरुदेव और गिरधर महराज उस कमरे से उठकर दूसरे कमरे में चले गये.मै ध्यान में बैठ गया. लगभग 15 मिनट बाद मेरे मस्तिष्क मेरे मूवी सी चलने लगी. मै कुछ पुराने दृष्य देख रहा था. जिनमें गिरधर महराज भी थे.

दरअसल जोगी महराज मुझे ध्यान में ले जाकर गिरधर महराज का पूर्व जन्म दिखा रहे थे. इससे पहले मैंने अपने पूर्व जन्मों को खुद देखना तो सीखा था। मगर दूसरों का पूर्व जन्म भी देखा जा सकता है। वह भी इतनी सटीकता से। ये सिद्धि पहली बार देख रहा था। मैने सब कुछ देखा. गिरधर महराज ने पूर्व जन्म में क्या किया, जिसके कारण इस जन्म में उन्हें इतनी सख्त सजा मिल रही थी. और वे अपने सक्षम मित्रों की मदद क्यों नही ले पा रहे थे।

MRITYUNJAY YOG

पत्नी के श्राप से जन्मों तक रूठ गई लक्ष्मी मां

गिरधर महाराज इस जन्म में सिद्ध संत बने. उनके पास रहने को ठीक झोपड़ी और खाने को दो समय का आनाज भी नही जुट पाता था. उनके साथ रहने वाले संत भी इसी हात में थे. लक्ष्मी मइया उनसे रूठी थीं. क्योंकि पूर्व जन्म में उन्होंने अनजाने में पत्नी को बहुत अपमानित किया था. क्षुब्ध होकर उनकी पत्नी ने श्रापित कर दिया था. ये बात मुझे उनके पूर्व जन्म में जाकर पता चली. जोगी महराज मुझे समाधि के द्वारा गिरधर महराज के पास्ट में ले गये. ये गजब की सिद्धी थी. तब तक गुरुदेव ने मुझे समाधि में जाना नही सिखाया था. फिर भी मै समाधिस्थ हो गया. जब मै जोगी महराज के समक्ष आंखे बंद करके बैठा तो लगा जैसे मेरे सिर पर बोझ सा लाद दिया गया हो. पहले मैने सोचा था कि जोगी महराज मेरे आज्ञा चक्र को अपने नियंत्रण में लेकर पास्ट में ले जाएंगे. मगर ये क्रिया वैसी नही थी. ये तो मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व को नियंत्रित करने जैसा था. मेरे सोचने समझने से पहले ही कब्जा हो चुका था. मै घोर अंधकार में लुढकता जा रहा था. जैसे किसी काली सुरंग में ढ़केल दिया गया हो. चाहकर भी सम्भल नही पा रहा था. सोचने समझने की शक्ति से परे था. बिल्कुल पराधीन.नही पता कितनी देर.

जब चेतना का अहसास हुआ तब किसी और दुनिया में था. वो राजाओं का युग था. मै उस युग का हिस्सा नही था. सिर्फ वहां का दर्शक सा लगा. गिरधर जी मुझे वहां नजर आये. वे वहां के राजगुरू थे. बहुत ज्ञानी, बहुत तेजस्वी, बहुत सम्मानित, उच्च कोटि के साधक. उनके साथ शिष्यों का जमावड़ा. किसी बात पर पत्नी से तर्क हो रहा था. दोनो गुस्से में थे. कहते हैं गुस्सा ज्ञान को खा जाता है. यही मुझे उस वक्त भी नजर आया. तर्क ने सीमा लांघी. तो कुछ अपशब्ध हावी होने लगे. गिरधर जी की पत्नी सहम सी गईं. पर गिरधर जी न रुके. अपने शिष्यों के सामने ही कुछ ऐसी बातें बोलीं जो मर्यादा के उलट थीं. उनकी पत्नी रोने लगीं. शब्दों से आहत पत्नी ने श्रापित किया. कहा हे मां लक्ष्मी यदि मै मन से इनका (गिरधर जी का) त्याग कर रही हूं, यदि मैने सच्चाई से आपको माना है तो आप भी इन्हें त्याग देना. ऐसा कहकर वे भवन के भीतर चली गईं. वे मां लक्ष्मी की सच्ची साधक थीं. लक्ष्मी मां ने उनकी पुकार अपना ली. मगर अपने क्रोध के वश में हुए गिरधर जी ने पत्नी के श्राप पर ध्यान नही दिया.

जिसका परिणाम पिछले दो जन्मों से भुगत रहे थे. उनके साथ धनहीनता का जीवन जी रहे संतों में से कुछ पूर्व जन्म के शिष्य ही थे. पिछले जन्म में गिरधर जी मजदूर थे. कड़ी मसक्कत के बाद भी वे भर पेट भोजन की व्यलस्था नही कर पाते थे. पूर्व की साधनाओं के प्रभाव से एक संत ने उन्हें शिष्य के रूप में अपना लिया. साधनायें सिखायीं. मगर वे सिद्धियां अर्जित कर पाते उससे पहले ही उनके गुरू ने शरीर छोड़ दिया. उनकी साधनायें अधूरी रह गईं.

इस बार भी उनका जन्म बहुत गरीब परिवार में हुआ. पिछले जन्म की भक्ती-साधना भाव के प्रभाव से इस जन्म में 14 साल की उम्र में ही गुरू का साथ मिल गया. जब तक वे अपने गुरू के सानिग्ध में रहे तब तक तो ठीक था. मगर गुरू के शरीर छोड़ने के बाद वे दोबारा लक्ष्मी हीनता से ग्रसित हो गये. इस बीच वे कई सिद्धों के सम्पर्क में आ चुके थे. कुछ सिद्धियां भी अर्जित कीं. अपनी महागरीबी का कारण भी जान लिया.

गिरधर महराज का पास्ट जानने के बाद भी मेरे दिमाग में सवाल बचे रह गये. जोगी महराज मेरी मनोदशा जान गये. उन्होंने कहा अब कुछ नये सवाल तुम्हें परेशान कर रहे होंगे. मैने हां में सिर हिला दिया. पूछो, उन्होंने अनुमति दी. जब गिरधर जी ने सिद्धियां अर्जित कर ली हैं तो भी वे श्राप मुक्त नही हो पाये, ऐसा क्यों. मैने पूछा.

पहली बात तो सिद्धियां अर्जित करना और श्राप मुक्त होना, दोनो अलग अलग विषय हैं. जोगी महराज ने बताया. साधना सिद्धियों से उन्होंने भगवान की नजदीकियां तो अर्जित कर लीं. मगर श्राप मोक्ष नही हुआ. तो क्या भगवान की नजदीकियां भी श्राप मुक्त नही कर सकतीं. मैने पूछा. ब्रह्मांड में संचालन और दंड के नियम लागू हैं. श्राप एक दंड है. जिसे भुगतना ही होता है. मगर भगवान दंड पाये भक्तों के लिये सरलता के रास्ते भी निकाल देते हैं. जोगी महराज ने कहा. जो गिरधर महराज का श्राप कैसे खत्म होगा. मैने पूछा. भगवान ने उनके लिये कोई सरल रास्ता क्यों नही निकाला. अगले जन्म में वे श्राप मुक्त हो जाएंगे. इसके लिये उनकी वही पत्नी पुनः उनके जीवन में आएंगी. वही श्राप मुक्त करेंगी. ये रास्ता बनाया है भगवान ने उनकी श्राप मुक्ति के लिये. जोगी महराज ने बताया. रही बात श्राप के कठिन दौर में सरलता से जीने की तो कुछ समय बाद उर्जा नायक (ये सम्बोधन उन्होंने गुरुवर के लिये किया था, गुरुदेव के अध्यात्मिक मित्र उन्हें उर्जा नायक कहकर पुकारते हैं) उन्हें लक्ष्मी सम्मोहन साधना कराने जा रहे हैं. जिससे बात बन जाएगी.

इस जानकारी ने मुझे बहुत राहत दी. क्योंकि गुरुवर द्वारा कराई जाने वाली लक्ष्मी सम्मोहन साधना जन्मों से चली आ रही गरीबी को हटाने में सक्षम होती ही है. बाद में समय मिलने पर मैने गुरुवर से पूछा गिरधर जी आप लोगों से सीधा सहयोग क्यों नही लेते. क्योंकि ऐसा करने से उनके प्रारब्ध बचे रह जाएंगे. गुरुदेव ने बताया. जिनके लिये दोबारा तकलीफों भरा जन्म जीना पड़ेगा. वे इसी जन्म में सारी सजा भुगत लेना चाहते हैं. क्योंकि अब उन्हें अपनी पुरानी गलतियों का अहसास है. मां लक्ष्मी ने उनकी पत्नी की बात को ही क्यों स्वीकारा. मैने गुरूदेव से श्राप भलित होने का कारण पूछा. गिरधर जी भी तो उस जन्म में उच्च साधक थे. उन पर दया क्यों नही दिखाई. पत्नी तो खुद ही लक्ष्मी होती है. गुरूदेव ने कहा. उसका श्राप और साथ अपने आपमें लक्ष्मी जैसा ही होता है. भगवती लक्ष्मी उसकी भावनाओं के विरुद्ध नही जातीं. यदि कोई पत्नी ही ठीक न हो. वह अकारण पति से झगड़े, ईगो का शिकार हो, गलत राह पर चल पड़े तो. मैने आज की सामाजिक स्थिति को देखते हुए पूछा. गिरधर जी की पत्नी ऐसी नही थी. गुरुदेव ने बताया. दूसरी बात पत्नियों को प्यार से जीता जा सकता है. तीसरी बात कोई पत्नी अकारण गलत राह पर नही चल पड़ती. यदि किसी में ऐसा दोष उत्पन्न हो तो ये प्रारब्ध के कारण ही होता है.

क्या बिगड़ी हुई पत्नी के कारण भी ऐसा श्राप लग सकता है. मैने पूछा.

यदि उसके बिगड़ने के लिये रंच मात्र भी पति जिम्मेदार है तो जरूर लग सकता है. गुरुदेव बोले. अब पत्नी पुराण छोड़ो और जोगी जी के साथ जाने की तैयारी करो. वे तुम्हें स्वर्ण यक्षिणी की साधना कराएंगे. मगर ध्यान रखना ये साधना तुम स्वर्ण प्राप्ति के लिये करने नही जा रहे. बल्कि यक्षिणी को अपना अध्यात्मिक मित्र बनाने के लिये करोगे. इसलिये यदि साधना काल में देवी तुम्हारे समक्ष सशरीर न आयें. तो भी विचलित न होना. सिद्ध होने के बाद वे सदैव तुम्हारे साथ ही रहेंगी. सिद्ध होने के बाद मै तुम्हें उनसे देवदूतों की तरह काम लेने की विधि सिखाऊंगा.

मै खुशी से झूम उठा. जोगी जी ने अभी तक अपने भी किसी शिष्य को ये सिद्धी नही कराई थी. उन्होंने मुझे चुना, इस बात की बड़ी खुशी थी. मै यक्षिणी को अपना मित्र बनाने की तैयारी में जुट गया.

आगे मै आपको गुरुवर द्वारा कराई जाने वाली लक्ष्मी सम्मोहन साधना की जानकारी दूंगा. जिसे अपनाकर गिरधर महराज को राहत मिल गई. उनका श्राप पोस्टफोन सा हो गया. वैसे भी लक्ष्मी सम्मोहन करके लोग आर्थिक संकट से बाहर आ ही जाते हैं.

MRITYUNJAY YOG